ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

# स्वाधीनता आंदोलन और छायावादी काव्य

**प्रा. जाधव जे. बी.**

*हिंदी विभागाध्यक्ष,*

*छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय, कळंब*

**प्रस्तावना:**

आधुनिक काल के तृतीय चरण को छायावादी काव्य कहा गया है। छायावाद की समय सीमा सन 1920 ई से 1936 इ. तक मानी गई है। कुछ आलोचक इसे 1918 से 1938 ई. मानते है। इस कालखंड में छायावादी रचनाएँ ही नही अपितु राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा से जुडी हुई रचनाएँ भी लिखी गई थी। इस समय में माखनलाल चतुर्वेदी बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामनरेश त्रिपाठी का काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। छायावादी काव्य में नवजागरण का सन्देश फैल रहा था अत: अतीत गौरव की अभिव्यक्ति, स्वाधीनता की चेतना, राष्ट्रप्रेम , त्याग और बलिदान, अस्मिता की खोज छायावादी कविता में दिखाई पडती है। गांधीवादी जीवन मूल्यों का छायावाद पर प्रभाव दिखाई देता है। उस समय का राजनीतिक परिवेश गांधीजी की सक्रिय भूमिका से प्रभावित था।

छायावाद का प्रयोग प्रारम्भ में व्यंग्य रुप से उन कविताओं के लिए किया गया जो अस्पष्ट था जिनकी छाया (अर्थ) कही और पडती थी। कालान्तर में यह नाम उन कविताओं के लिए रुढ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौदर्य में 'आध्यात्मिक छाया' का भान होता था और वेदना की रहस्मयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यजना की जाती थी। प्रमुख विद्वानो द्वारा छायावाद की परिभाषा –

डॉ. रामकुमार वर्मा –

"परमात्मा की छाया आत्म में आत्मा की छाया परमात्मा में पडने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टी होती है"।

डॉ. नगेद्र –

'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। यह एक विशेष प्रकार की भाव पध्दति है, जीवन के प्रति विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है"।

महादेवी वर्मा-

"छायावाद तत्वत: प्रकृति के बीच जीवन का उदगीथ है"। ... उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।

**Copyright © 2024 The Author(s):** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

छायावादी काव्य दो विश्वयुध्दो के बीच की कविता है। छायावादी काव्य का समय 1920 से 1936 ई. में भारतीय जनमानस पर देश को स्वतंन्त्रा कराने की चेतना पूर्णता: छाई हुई थी। उस समय तिलक का उद्घोष् स्वतन्त्रा हमारा जन्म सिध्द अधिकार है और सुभाष चंद्र की हुंकार 'तुम मुझे खुन दो, मैं तुम्हे आजादी दूँगा' ने जनता को आजादी की लडाई की ओर उन्मुख किया था। एक ओर तो गांधीजी असहयोग, सत्याग्रह, कर रहे थे तो दूसरी ओर क्रान्तिकारीयों के बलिदानों ने सोई हुई जनता को जगा दिया। इस समय काकोरी षडयन्त्र केस 1925 ई. भगतसिंग, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी 23 मार्च 1931 ई जैसी घटना घटित हुई थी।

इन परिस्थितियों का प्रभाव छायावादी कवियों पर अनिवार्य रुप से पडा था और इसका उदाहरण हमें माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' जैसी रचना लिखी जिसमें एक पुष्प यह अभिलाषा व्यक्त करता है कि मुझे उस रास्तें पर फेंक देना जिस रास्ते पर बलिदान देने हेतू वीर जा रहे हो-

मुझे तोड लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर सीस चढाने जिस पथ पर जावे वीर अनेक।

छायावादी काल में काव्य की तीन प्रमुख धाराएँ विकसित हुई

1) छायावादी काव्यधारा- प्रमुख कवि प्रसाद पंत, निराला, महादेवी वर्मा
2) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा – माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नविन रामनरेश त्रिपाठी
3) प्रणय काव्यधारा – हरिवंशराय बच्चन , नरेन्द्र शर्मा और रामेश्वर शुक्ल अंचल के नाम है।

राष्ट्रीय धारा के कवियों ने देशवासियों को स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पडने के लिए प्रेरित किया तथा भारत की आन्तरिक विसंगतियों एवं विषमताओं को दूर करने का आव्हान किया।

बालकृष्ण शर्मा नविन की रचना में क्रांति एवं ध्वंस का स्वर विद्यमान है –

कवि कुछ ऐसी तान सूनाओं जिससें उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए।
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाएँ।

विप्लवगान कविता जडता के विरुध्द विकास एवं गतिशीलता की कविता है। यह हमे संदेश देती है कि जब हमारे पुराने रीति-रिवाज व रुढिवादी परम्पराएँ हमारे लिए बोझ बन जाएँ और हमारी उन्नति में बाधा उत्पन्न करने लगे, तो हमे उन्हे तोड देना चाहिए, क्योंकि नवनिर्माण करने के लिए पुरानी परम्पराओं का विध्वंस करना।

प्रसाद जी ने अपने नाटकों – चन्द्रगुप्त, स्कदगुप्त के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की तथा भारत के अतीत गौरव का गान किया। चन्द्रगुप्त नाटक में राष्ट्रीयता अपने चरम शिखर पर है। कार्नेलिया भारत को अपना देश मानते हुए उसकी प्रशंसा इस तरह करती है –

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।
फैला जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्र जागरण के साथ समग्र चेतना का जागरण और आव्हान है, व्यक्ति में निहित शक्ति के उध्दाटन का उपक्रम है। यह राष्ट्रीय नहीं अपितु सम्पूर्ण सांस्कृतिक जागरण का काव्य है। आरंभ में ही यह स्पष्ट करना

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

आवश्यक है कि प्रसाद उस अर्थ में राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय चेतना के कवि नही है जिस अर्थ में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन है। प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना अधिक रुप में उनके नाटकों में व्यक्त हुई है। प्रसाद की अपनी पहचान के आधार पर छायावाद को राष्ट्रीय काव्य कहना उतना उचित नही होगा। लेकिन यहाँ यह भ्रम नही होना चाहिढ कि राष्ट्रीय काव्य का महत्व छायावादी काव्य में कम है। छायावादी काव्य में राष्ट्रीय जागरण सांस्कृतिक जागरण के रुप में आता है। इस सांस्कृतिक जागरण की अभिव्यक्ति प्रसाद के काव्यसंकलन 'लहर' में शेरसिंह का आत्म समर्पण और पेशोला की प्रतिध्वनि नामक दो कविताएं संकलित है जो स्वतन्त्रा चेतना से युक्त है। इनमें से शेरसिंह का आत्म समर्पण कविता में 1849 ई. की उस ऐतिहासिक घटना का उल्लेख है जिसमें सिखों की वीर सेना ने अंग्रजो के दांत खड्डे किए थे। 'पेशोला की प्रतिध्वनि नामक कविता में उदयपूर की 'पिछोला' झील को देखकर राणाप्रताप की वीर भूमि मेवाड का स्मरण किया है। जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार नही की।

आज मेवाड में कौन ऐसा वीर है जो छाती ठोककर दृढता के साथ यह कह सके कि मैं इन विदेशियों को यहाँ से मार भगाऊंगा और अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने का उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लेगा। राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत इस कविता में कवि ने प्रश्न किया है कौन देश को स्वतन्त्र कराने का बोझ उठाने को तैयार है।

"कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन
सांस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर
मैं हूँ मैं हू मेवाड में
अरावली श्रृंग सा समुन्नत सिर किसका ?
बोलो, कोई बोलो अरे तुम सब मृत हो?

प्रसाद ने कामायनी में जगत की सत्यता का प्रतिपादन कर पलायनवाद एवं निराशावाद का विरोध किया। नवजागरण की बेला में वे कर्मठता, कर्मण्यता का संदेश देते हुए नवयुवकों को संसार में प्रवृत्त होने एवं देश के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देते है। राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय जागरण की भावना को जगाएं रखने में प्रसाद के इन विचारों की प्रमुख भूमिका है। उनके नाटकों के पात्र त्याग, सेवा, बलिदान की भावनाओं से ओतप्रोत है तथा उनमे आत्मगौरव, स्वाभिमान एवं राष्ट्रीय चेतना विद्यमान है।

'जागो फिर एक बार कविता में निराला ने भारतीयों को उनके अतीत गौरव का स्मरण कराते हुए उन्हे स्वतन्त्र चेतना से भरने का सफल प्रयास किया है।

"जागो फिर एक बार।
पशु नही वीर तुम समर शूर क्रूर नहीं
काल-चक्र में हो दबे आज तुम राजकुंवर , समर सरताज।
तुम हो महान
तुम सदा हो महान
है नश्वर यह दीन भाव
कायरता, कामपरता
ब्रम्हा हो तुम
पदरज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्व भार
जागो फिर एक बार"।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I ) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

छायावादी कवियों में राष्ट्रीयता की सर्वाधिक प्रखर भावना निराला में दिखाई पडती है। 'जागो फिर एक बार' कविता में निराला ने भारत की उन चिर प्रसुप्त शक्तियों को जगाने का प्रयास किया है जो परतन्त्रता की गहरी नींद में सोई पडी थी। वे कहते है आज तुम पारतन्त्र में हो, दमित हो, किंतू अतीत में तुम समर-सरताज रहे हो तुम्हारा यह दीनभाव नश्वर है, इसे त्याग दो।

सामूहिक विकास के लिए पंतजी जहां मार्क्सवादी विचारधारा का समर्थन करते है, वही वैयक्तिक विकास के लिए गांधीवाद को उचित मानते है। 'युगवाणी' में इन दोनो विचारधाराओं से प्रभावित रचनाएँ संकलित है। युगांत में कवि ने पुरातन को नष्ट होने का आव्हान किया है –

गा कोकिल बरसा पावक कण।
नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन।

**निष्कर्ष :**

उक्त विचन से स्पष्ट है कि छायावादी काव्य में एक ओर तो राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करनेवाली रचनाएँ लिखी गई तो दुसरी ओर सामाजिक चेतना को परिवर्तित करने का प्रयास किया गया। छायावादी कवियोंने भारत के अतीत गौरव का गान किया, विदेशी सत्ता को उखाड फेकने के लिए जनता को अव्हान किया, देश में स्वातन्त्र चेतना को जगाया।

**संदर्भ ग्रंथ सुची**

1) स्वतंत्रता पुकारती – नंद किशोर नवल
2) निराला की साहित्य साधना – रामविलास शर्मा
3) कामायनी – जयशंकर प्रसाद
4) छायावाद द्वितीय संस्करण – नामवर सिंह
5) छायावाद कविता की आलोचना स्वरुप और मूल्यांकन – डॉ. ओमप्रकाश सिंह
6) चंद्रगुप्त (नाटक) – जयशंकर प्रसाद

*Cite This Article:*

**प्रा. जाधव जे. बी. (2024).** *स्वाधीनता आंदोलन और छायावादी काव्य*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 52–55) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646588